# मेरा पहला दोस्त

बर्लिन के टीयर गार्डेन नाम के इलाके मे एक सिगमून्डसहोफ नाम का छोटा सा चन्द्राकार रास्ता है जिससे लगे स्टूडेन्टेनवेर्क के भी कई हॉस्टल्स है।यहॉ से बर्लिन की टेक्निकल यूनिवर्सिटी ही नही,बल्कि बर्लिन का सोलोगीसर गार्डेन भी बेहद करीब है।समीप ही एक सरफेश ट्रेन का स्टेशन भी है।एक स्टेशन के बाद ही बर्लिन का मेन रेलवे स्टेशन आ जाता है।यातायात के हिंसाब से बर्लिन मे सिगमून्डसहोफ को एक तरह से केन्द्रीय कहा जा सकता है।सिबसेन्टेन यूनि नाम की एक चौड़ी सड़क पर,जो इसे छूती गई है,हर शनिवार और रविवार को बर्लिन का सबसे बड़ा फ्लो मार्कट लगता है,जहॉ लोगबाग अपनी अनावश्यक चीजें बेचने आते है।इस सड़क की एक दूसरी खासियत ये है कि शाम के धूँधलके मे सड़क के दोनो तरफ न जाने कहॉ कहॉ की लड़कियॉ और औरतें आ कर थोड़ी थोड़ी दूरी पर खड़ी हो जाती हैं।ज्यादेतर इनके ग्राहक मोटर गाड़ी वाले होते हैं या फिर ट्रकों के ड्राइवर्स।मोटर गाड़ी वाले इन्हे कहॉ लिवा जाते है,ये तो वो ही जाने,पर ट्रको के ड्राइवर्स इन्हे अपने ड्राईविंग सीट से लगे कैबिनो मे।इस सड़क के समानान्तर जो सरफेश बान चलती है,उसे कुछ दूरी तक एक पुल पर से हो कर गुजरना पड़ता है।इस पुल के नीचे घिरे घिराए बड़े बड़े हॉल्स है।कुछ हॉलों के कैबिनों मे भी ये मेनकाएँ अपने ग्राहकों को ले जाती हैं।

सिगमून्डसहोफ से सट कर एक कनाल है,जिसमे जब तब बेड़े भी देखे जा सकते है।इसके तटों पर लगे ट्राऊ वाइडे नाम के विशाल पेंड़ो की डालियॉ पानी तक लटकी रहती है।एक हन्सा प्लात्स नाम का मेट्रो स्टेशन भी यहॉ से ज्यादे दूर नही है।

सिगमून्डसहोफ से एक शार्ट कट रास्ता एक बड़े से पार्क से हो कर सोलोगीसर गार्डेन को जाता है।इस पार्क का नाम भी टीयर गार्डेन ही है।गर्मी के दिनो मे हजारों लोगो को यहॉ टहलते देखा जा सकता है।कई तो यहॉ अपनी रातें भी बिताते हैं।

अन्धेरा छा जाने के बाद इस पार्क मे न सिर्फ वैश्यावृति की जाती है,बल्कि हशीश और ग्रास भी बेचे जाते हैं।सोलोगीसर गार्डेन से लगा बर्लिन का डाऊन टाऊन कू डाम है,जहॉ एक से एक भव्य दुकानें,रेस्त्रॉ,पब्स,होटल्स इत्यादि तो हैं ही साथ साथ यहॉ दबा के सिनेमाहॉलों के बड़े बड़े स्क्रीनो पर पोर्नोस दिखाए जाते है।पीप शो और विडियोज पर पोर्नोस की भी यहॉ बेशूमार दुकाने है।

यहॉ भी दुकानो के सामने बने शीशे के शो केसों के बगल मे बिना दिन या रात की परवाह किए लड़कियॉ खड़ी रहती है,पर इनके कपड़े लत्तों का स्तर देख कर इन्हे कोई भी वैश्या नही कह सकता।ये अपने मेहमानो को अपनी सेवायें मॅहगे होटलों के कमरो मे देती हैं।

मै सिगमून्डसहोफ के एन हॉस्टल मे रहता था,जहॉ से जितनी दूरी टीयर गार्डेन सरफेश बान स्टेशन की थी,करीब उतनी ही हन्सा प्लात्स मेट्रो स्टेशन की।मेरा हॉस्टल सिगमून्डस होफ के अन्तिम सिरे पर थोड़ी गहराई मे था।ठीक सामने एक पोखरे के आकार का गढा था,जहॉ करीने से कटे घास मुझे बड़े भाते थे।सामने हॉस्टल पी की गगनचूम्बी इमारत,बॉई तरफ एक खुला सा मैदान,दॉई तरफ पानी का कनाल,उसके तटो पर लगे ट्राऊ वाईडे के बड़े बड़े पेंड़ और इस कनाल पर बनी एक छोटी सी पूलिया।मै अक्सर अपनी बालकोनी मे खड़ा आसपास की फैली सुन्दरता निहारा करता था।

हाऊस एन एक तीन मंजिली इमारत थी,जिसके बॉये विंग मे चार बड़े कमरे और दॉये विंग मे सात छोटे कमरे थे।फ्लोर पर दो कम्बाईन्ड बाथ रूम्स एक कम्बाईन्ड कीचन और एक कॉमन रूम था।मै तीसरे फ्लोर पर तीन सौ बीस नम्बर के एक बड़े कमरे मे रहता था।

सिगमून्डसहोफ से मेरा लगाव आज तक दो वजहों से है।पहली वजह ये है कि यहीं बर्लिन मे मुझे पहली छत मिली थी।दूसरीःयहॉ मिले मेरे तीन पड़ोसी मुझे आज तक वहॉ से जोड़े हुए हैं।इनमे से एक का नाम नासिर था।वो लाहौर का रहने वाला था और बर्लिन के टेक्निकल यूनिवर्सिटी मे इकनामिक्स पढ रहा था।यहॉ मै थोड़ा सुधार कर देता हूँ।वो इस फैकल्टी मे रजिस्टर्ड था।मै नही समझता कि वह अपनी क्लासों मे भूल कर भी एक बार गया होगा।बर्लिन आये उसे तीन वर्ष हो चुके थे।

एक जर्मन लड़की से शादी करके वो यहॉ अपने पॉव सही तरह जमा लिया था।अनलिमिटेड वीजा,अनलिमिटेड वर्क परमिट,परमानेन्ट काम,एक सेकेन्ड हेन्ड गाड़ी क्या कुछ उसके पास नही था।उसकी पत्नी हमारे ही फ्लोर पर बॉयें विंग के कमरा नम्बर तीन सौ तेरह मे रहती थी।उसका नाम आन्जेलिका आल था।वो टेक्निकल यूनिवर्सिटी मे ऋतु विज्ञान पढती थी।वो हेसेन की रहने वाली थी।

भाषा की वजह से सबसे पहले मै नासिर के ही सम्पर्क मे आया।शुरू के दिनो मे मेरी इनसे कम्बाईन्ड कीचन मे ही मुलाकात होती थी।इनके पास अपना निजी फ्रीज था।उसे लॉक किया जा सकता था।खाने पीने के सामानों से इनका फ्रीज ऊपर से लेकर नीचे तक भरा रहता था।नासिर को वाकई खाना बनाना आता था।भरे पराठे,केसर के साथ बासमती चावल,कीमा,कबाब,मुर्गमुसल्लम,कराही मीट,उसे सब कुछ बनाना आता था।जब ये अपने खाने दोनों मे लेकर अपने कमरों मे चले जाते थे,कीचन ही नही बल्कि फ्लोर भी इनके खानों की खूशबू से भरा रहता था।इनके खानों को देखने के बाद हमसे अपने खानों की तरफ देखा तक न जाता था।इनके बर्त्तन भी चॉदी की तरह चमकते रहते थे।आन्जेलिका भी नासिर की मदद करने आ जाती थी।उसके जिम्मे काटने छॉटने का ही काम होता था।

पहनने के नाम पर नासिर के पास एक से एक कपड़े थे,पर हॉस्टल मे वो ढीले ढाले पैजामे,कमीज और पेशावरी चप्पल ही पहनता था।आन्जेलिका ज्यादेतर स्कर्ट और ब्लाउज पहनती थी।वो थोड़े भरे बदन की थी और गोल फ्रेम का चश्मा पहनती थी,फिर भी वो एक बेहद आकर्षक लड़की थी।नासिर और उसके बीच ऐसा कोई खास मैच नही था।नासिर के पास सीमान्त गान्धी की कद तो थी ही,उसे स्वास्थ्य भी उन्ही से विरासत मे मिला था।उसकी चाल भी बगूलों जैसी थी।

सिगमून्डसहोफ मे रहने वाले इन्डियनो और पाकिस्तानियों के बीच अक्सर उसकी चर्चा होती थी।सभी उससे मन ही मन जलते थे।बिना लैंग्वेज के क्या माल फॉसा इस बगूले ने।एक डाक्टर दम्पति की इकलौती बेटी,जो बीस वर्ष की भी न थी कि इस खूसट के झॉसों मे आ गई।साला पूरे वसीयत का अकेला हकदार है।एक झटके मे ये अपना सारा खानदार सुधार लिया।नासिर को सिगमून्डसहोफ मे न जाने कितने उपनाम मिले हुए थे।

एक साल तक मेरा इनसे हलो हाय तक ही सम्वन्ध रहा।फिर मुझे एक बार इनसे शाम के खाने का न्यौता मिला और वो भी आन्जेलिका के कमरे मे।मै इनसे पूछ पूछ कर हार गया कि किसी का जन्मदिन तो नही है,पर पता न कर पाया।नियत समय पर मै अपने कपड़े वगैरह बदल कर अपने बॅधे टयूलिपस के फूल और आल्डी से खरीदी एक सस्ती शैम्पेन लिए आंजेलिका के दरवाजे पर जा पहुँचा।एक हल्की दस्तक देते ही आंजेलिका ने दरवाजा खोला।उसके कमरे की सजावट देख कर मुझे ऐसा लगा,जैसे मै किसी पॉच सितारा होटल के प्रेसिडेन्ट स्विट मे पहुँच गया होऊॅ।हल्के नीले रंग के सिल्की पर्दे,इसी रंग की कालीन,उजाला उगलता झाड़ फानूस,सजी सजाई महागोनी की खाने की मेज,कमरे के एक कोने

मे रखी महागोनी की एक तख्त पर रखा एक बड़े स्क्रीन का टेलीविजन. म्यूजिक सिस्टम. छत तक गया मैगनौलियन का पेंड़ जिसका एक एक पत्ता चमक रहा था। रईसी का भी अपना एक रंग और नशा होता है।
नासिर के बनाये खाने सुन्दर सुन्दर दोनों मे मेज पर सजे पड़े थे। नक्कासीदार प्लेटें. चॉदी के कॉटे और छूरियॉ और ऊपर से नासिर और आंजेलिका का अपनत्व। मै वाकई आवाक होके रह गया था।
खाने के बाद हम नासिर के कमरे मे आये. जो इनके सोने का कमरा था। इस कमरे मे डबल गद्दा फर्श पर ही डाला गया था। इस कमरे मे भी हल्के नीले रंग का ही प्रभुत्व था। पर्दे. कालीन. बिस्तरों पर पड़े रजाई. तकिये. जिधर भी नजर जाती थी. हल्के नीले रंग का बोलबाला था। इस कमरे मे भी एक बड़े स्क्रीन का टेलीविजन और एक मॅहगा म्यूजिक सिस्टम फर्श पर रखा हुआ था। इनके सोने वाले बिस्तर पर बड़े आग्रह के बाद मुझे भी बैठना पड़ा। नासिर के पास हिन्दी के पुराने गानों या फिर गजलों की न जाने कितनी कैसेटें और रिकार्डस रहे होंगे।
इस शाम नासीर ने मुझे अपनी शादी की अल्बम भी दिखाई। जरी के सलवार कुर्ते और नक्काशीदार जूतियों मे आंजेलिका किसी अप्सरा से कम न दिख रही थी। ये शाम दरअसल परिचय की शाम थी। नासिर मुझसे दो वर्ष बड़ा था. फिर भी वो मेरा नाम न लेकर मुझे भाईजान ही कहता रहा। आंजेलिका बस रह रह कर मेरा नाम ही दुहराती रही और अपने उच्चारण के बारे मे पूछती रही। पढाई लिखाई के नाम पर बिना लाग लपेट के नासिर ने मुझे बतायाःदेखो भाईजान!मै बी ए थर्ड डिवीजन से पास हूॅ। उर्दू के अलावे मुझे कोई जबान ढंग से नही आती। लाहौर मे मै दलाली करता था। किसी तरह तिकड़म लगा कर जर्मनी आ गया। यहॉ किस्मत से आंजेलिका टकरा गई और मेरे कागजात सही हो गये। स्वाईत्तसर होफ मे बेयरागिरी का काम है। बस गुजर बसर हो रही है। आप अपने हो। आप से क्या छुपाना है!
नासिर का कहा अन्तिम वाक्य वाकई कहीं मेरा मन छू गया था।
कमरा छोड़ने से पहले जब मैने उससे कहाःकभीं आप भी आंजेलिका के साथ मेरे कमरे मे आईएगा। मुझे आप की तरह खाना बनाना तो नही आता. पर रूखी सूखी मै भी बना लेता हूॅ।
ःहॉ हॉ क्यों नही। आप जब भी बुलायें. हम हाजिर हो जायेंगे।
ःपर मै आपलोगों को ये माहौल तो नही दे पाऊॅगा।
ःमाहौल पर लानत डालिये। प्यार मुहब्बत भी तो कोई  चीज़ होती है।
मुझसे गले मिलने के लिए उसे थोड़ा झुकना पड़ा। आन्जेलिका की तरफ मैने सिर्फ अपना हॉथ ही बढाया।
इस तरह बर्लिन मे मुझे नासिर नाम का एक पहला दोस्त मिला।
नासिर और आंजेलिका के साथ सिगमून्डसहोफ मे मेरा एक साल बड़ी आत्मीयता और सहृदयता के साथ गुजरा। हम दो तीन मुलाकातों के बाद ही आप से तुम पर आ चुके थे. पर मुझे ये पता नही था कि इस सम्बन्ध की तह मे कोई चिन्गारी सूलग रही है। आये दिन गई रात या तो इनका टेलीविजन तेज हो जाता था या फिर इनका म्यूजिक सिस्टम। ये सब मुझे उतना परेशान नही करता था। मुझे परेशान इनके झगड़े करते थे। ये किन बातों पर झगड़ा करते थे. ये मै न जान पाया। हमारे कमरों के बीच की दीवार इतनी पतली भी न थी। मिलने जूलने पर ये मुझे किसी कलह की आहट न देते थे. पर एक अनहोनी आशंका मेरे मन मे कूंडली मारके बैठ चुकी थी। इनके झगड़ो की भाषा कितनी सभ्य या असभ्य हुआ करती थी. ये पहली बार मुझे तब पता चला. जब मैने इनके झगड़ों मे हूरे और स्वूल जैसे शब्द सुने। अब मै ये जान चुका था कि ये परिवार अब थमने से रहा। इसे अब थामा नही जा सकता है।
चूॅकि मै इनका दोस्त था. बहुत ही जल्दी मेरे पास इनकी पहली फरयादें आई। जर्मनी मे इसे किसी की झोली मे अपने मन का उलेड़ना कहते हैं।
ःभाईजान!लाहौर मे मेरी सगाई तय हो गई थी. जिसे तोड़ कर उसके घर वालों ने उसकी सगाई एक बैंक के मैनेजर से तय कर दी। मुझसे ये सदमा झेला न गया। मै जर्मनी आ गया। एक साल यहॉ मै कुत्तों की तरह काम किया और इस रंडी के साथ लाहौर गया। शादी मे पानी की तरह पैसे बहाया और इससे बकायदा निकाह किया। मुझे अपनी चाचीजात बहन से बदला जो लेना था। लाहौर मे आज तक हमारे निकाह की चर्चा होती है। पर ये रंडी है। इसका मन ही नही भरता। जब देखो तब नोख माल नोख माल करके सर पर चढी रहती है। मै एक इन्सान हूॅ. मशीन तो नही हूॅ!
ःप्रमोद!तुम्हारा दोस्त एक वहशी जानवर है। उल्टे सीधे तरीकों से अपने आप को शान्त करवा लेता है। जब मेरी बारी आती है. तो कहने लगता है कि हमारे फ्लोर पर एक से एक भूख्खड़ रहते हैं। उनके पास जा कर अपने को ठंढा क्यों नही करवा आती!मुझे अब सोना है। सुबह काम पर जाना है।
दो सुनी फरियादों के ठीक मध्य मे एक सच्चाई का निवास होता है. जिसे जानने की न मुझे कोई अभिलाषा थी और न ही इस सच्चाई को जानने के लिए मेरे पास उपयुक्त परिपक्वता ही थी। एक कगार पर अपने फिसलते जीवन को मुझे भी सम्हालना था।
इनके बीच का कलह दिनोदिन बढता ही जा रहा था। तकरीबन रोज ही शाम को ये बिना नागा के झगड़ने बैठ जाते थे।
तलाक की पहल नासिर ने ही की। वो एक वकील के जरिये आन्जेलिका को इसकी इत्तला भिजवाई। आन्जेलिका भी सारे कागजों पर साईन करके नासिर के वकील को भेज दिया। ये तलाक उतना पेचीदा न था। छ महीने के अन्दर ये एक दूसरे से अलग हो गए।
बहुत ही जल्दी मुझे आन्जेलिका और आला के सम्बन्धों के बारे मे पता लगा। वो भी मेरा पड़ोसी था। वो कमरा नम्बर तीन सौ इक्कीस मे रहता था।
वो मुझे सिर्फ शाम के छ बजे बाथरूम मे ही मिलता था और वो भी अपनी मूॅछें एक कैंची से ट्रीम करते हुए। अपनी कुल्हाड़ी कट मूॅछें वो हर दिन ही ट्रीम किया करता था। कीचन मे एक दबकी पिचकी अल्यूमिनियम की देगजी मे उसके चार अंडे उबलते रहते थे। कभीं सफेद अंडे तो कभीं लाल। उसे हमेशा मै सिर्फ एक ही पोशाक मे देखता था। काले जूते. काली पतलून और एक काली आधी बॉह की एक बुशर्ट मे। ठंढ के दिनो मे वो एक काले रंग का ओवरकोट और एक काले रंग की हैट भी तिरछी करके पहने होता था। मै भी बस एक ही बात उससे पूछता थाःना आला!वी गेटस। उसका उबाऊ जबाब मुझे पहले से ही पता होता थाःमूस मूस।
अपनी मूॅछे ट्रीम करके. अपने अंडे वंडे खाके पता नही कहॉ चल पड़ता था। सुबह मेरी मुलाकात उसकी लाई रंडियों से बाथरूम मे होती थी। नंगी बिना दरवाजे बन्द किये नहाती रहती थीं। पता नही कहॉ से वो इन नमूनो को उठा लाता था!
बर्लिन मे वो एक दिन भी काम नही किया। न जाने किन पैसों से वो इस तरह के खर्चे उठाता था!उससे अपने कमरे तक का किराया नही भरा जाता था। खाने के नाम पर दिन मे चार अंडे और पीने के नाम पर आल्डी की सस्ती वाईने। म्यूजिक के नाम पर फ्लो मार्केट से खरीदा एक

रिकार्ड प्लेयर और बाबा आदम के जमाने के झड़ियल रिकार्डस.पर ऐसी कोई शाम न थी.जब उसके कमरे मे जश्न न मनती हो।ग्यारह बजा नही कि उसके कमरे की म्यूजिक ऑन हुई नही।कभीं कभी तो वो एक साथ तीन तीन रंडियों को पकड़ लाता था.फिर सुबह तक उसके कमरे मे धमाल मचती थी और हमारे फ्लोर पर एक भूकम्प आता था।

मै कईयों से सुन रखा था कि ये रंडियॉ ही उसके सारे खर्चे चलाती हैं।इनके बीच वो इतना विख्यात क्यों था.ये तो वही जाने या फिर उसका खुदा।इनमे से सिर्फ एक थी.जो सामने पड़ने पर कम से एक तौलिया अपने बदन पर रख लेती थी।गुटेन मोर्गन भी कह देती थी।वो किसी सरकारी ऑफिस मे काम भी करती थी।बाकियों का तो बड़ा बुरा हाल था।सब की सब पेशेवर थीं।शर्म हया तो उन्हे दूर से भी न छू रखा था।

अचानक आला का बाथरूम मे भी दिखना बन्द हो गया।सुबह वहॉ अब कोई रंडी भी न दिखती थी।आला मे आए इस परिवर्त्तन पर मै वाकई मे चकित था।अलगाव के बाद नासिर भी बदल चुका था.आन्जेलिका भी बदल चुकी थी.पर इन दोनों से मेरा अब तक हलो हाय होता रहता था।नासिर भी अब अपने आप को अपने कमरे मे तकरीबन बन्द कर लिया था.पर मुझे आन्जेलिका जब तब फ्लोर पर टकरा जाती थी।हलो कहने के बाद मै भी उससे क्या पूछता!फिर उसके पास बताने को भी क्या शेष बचा था!

एकाध बार मै उसे आला के कमरे से बाहर आते भी देखा.पर इस पर मैने कुछ ज्यादे ध्यान नही दिया।कौन किसके कमरे मे नही जाता!इसका उल्टा सीधा अर्थ मैने कभीं न लगाया।

कई सप्ताहों के बाद एक दिन आला मुझे वाकई शाम के छ बजे बाथरूम मे अपनी मूँछें ट्रीम करते दिखा।मैने सिर्फ उसका हालचाल ही पूछा था कि वो कहने लगा.पता नही तुम्हारा दोस्त आन्जेलिका के संग इतने वर्ष कैसे काट ले गया!ये तो पेशेवर रंडियों से भी बदतर है।मुझे तो उसे सलाम कहना पड़ गया।ये एक आला क्या दस आलों के भी वश की नही है।खून की आखिरी बूँद निचोड़ लेने के बाद भी शान्ति से नही बैठती है।

बिना आला से कुछ कहे मै अपने कमरे मे वापस आ गया।

काम की अतिशयोक्तिःनिम्फोमैनी शब्द से मै इतना अन्जान नही था।इसके अस्तित्व को मै जानता था।मुझे बस ये जानना था कि आखिर आन्जेलिका कैसे और क्यों निम्फोमैनिन है!

भूख और प्यास की तरह सेक्स भी तो हमारे इसी शरीर की एक मॉग है।एक प्यासे की प्यास तब भड़कती है.जब उसे पानी दिखा कर पीने से रोका जाता है।एक भूखे की भूख तब.जब उसके सामने रखी खाने की थाल वापस खींच ली जाती है।शायद कुछ ऐसा ही आन्जेलिका के साथ भी हुआ होगा।उसका कहा मेरे दिमाग मे न जाने कितनी प्रतिध्वनियों के साथ गूँजे जा रहा थाःअपने को वो उल्टे सीधे तरीकों से शान्त करवा लेता है।जब मेरी बारी आती है.तब कहने लगता है कि फ्लोर पर एक से एक भूखखड़ रहते हैं।उनसे अपने को ठंढा क्यों नही करवा आती!

हाऊस ओ मे सेल्व्स्ट फेरवालटूग्न के लड़के शनिवार के दिन एक डिस्को चलाते थे।इस हाऊस के बेसमेन्ट मे एक हालॅ था.जहॉ बाकायदा शराब .बीयर और कॉक्टेल्स भी बेचे जाते थे।वहॉ बिलयार्ड का एक टेबल भी था।अन्धेरा होते ही इस हॉल मे हरे और लाल रंग की बत्तियॉ जल जाती थी।पहला कैसेट या रिकार्ड म्यूजिक सिस्स्टम मे डाला क्या जाता था कि लोग थिरकना शुरू कर देते थे।आठ भी न बजे होते थे कि ये हॉल सिगरेट के धुँओं से इतना भर जाता था कि ऑखें तक जलने लगती थीं।शायद ही वहॉ कोई होश मे होता था।एक एक लड़की पर दसों लोग जूझे पड़े रहते थे।

एक दिन शाम को मै भी वहॉ बीयर पीने गया था।बार पर बैठा मै आराम से इस हॉल की एक एक गतिविधियॉ ध्यान से देखे जा रहा था।तकरीबन नौ बजे के आसपास इस हॉल का भारी भरकम पर्दा हटाकर मै आन्जेलिका को अन्दर आते देखा।इस समय एक छोटा सा ब्रेक चल रहा था।हॉल मे इतने जोरों से सीटियॉ बजनी शुरू हुई कि मुझे अपने कानो पर हॉथ धरना पड़ गया।उसकी तरफ लपक कर बढने वालों मे या तो अरबी थे या फिर अफ्रिकन्स।एक दो इन्डियन स्टूडेन्टस भी वहॉ थे.जो एक कोने मे दुबके विस्फारित ऑखो से आन्जेलिका को देखे जा रहे थे।

ये मेरे ऑखों की देखी बात है.जिसे मै झूठला नही सकता।एक घूँट मे आन्जेलिका अपने कॉक्टेल्स का भरा ग्लास खाली कर जाती थी.फिर अरबियों और अफ्रिकनों के बीच जाकर एक पागल जहरीली नागिन की तरह थिरकने लगती थी।कभीं कभीं तो वो अपने स्कर्ट इतना ऊपर खींच लेती थी कि मुझे दूसरी दिशा मे देखना पड़ जाता था।अपने ब्लाउज के वो इतने बटन खोल रखी थी कि उसका ब्रा तक देखा जा सकता था।

एक बजे रात तक मै सिर्फ उसी की वजह से इस पब मे बैठा रहा।जिन्हे जिनके साथ सरकना था.वो सरक चुके थे।अब आन्जेलिका भी छ सात कल्लूओं के साथ डिस्को छोड़ी।लड़कियों के जाने के बाद ये डिस्को उजाड़ ही हो चला था।दस बीस जो वहॉ बैठे थे.या तो मुझे शराबी दिखे या फिर मायूस और डरपोक आशिक.जो कुछ पाने के नाम पर बजाय आगे बढने के कायरों की तरह अपने आप को नशे नामकी देवी के चरणों मे अपना मस्तक नवा देते हैं।

सिर्फ आन्जेलिका की वजह से मै इस डिस्को मे लगातार हर शनिवार को महीनों तक गया और उसे अलग अलग समुदायों के संरक्षणों मे डिस्को छोड़ते देखा।दिन ब दिन आन्जेलिका सुन्दर से सुन्दरतम होती चली जा रही थी।

यूनिवर्सिटी के मेन बिल्डिंग और मेन्जा के बीच एक पार्क है.जहॉ वाली बाल के दसों कोर्टस बने हुए हैं।अपनी ब्रेकों मे मै भी वहॉ वाली बाल खेलने जाया करता था।मै किसी दल मे नही था।जिस कोर्ट मे जगह मिलती थी.वहॉ जाके खड़ा हो जाता था।ज्यादेतर मुझे उसी कोर्ट मे जगह मिलती थी.जहॉ आन्जेलिका खेलती होती थी।इस दल मे हमारे ही हॉस्टल का एक पैलेस्टिनियन लड़का जमाल भी खेलता था।देखते ही देखते ये दल यूनिवर्सिटी का सबसे सश्क्त दल बन गया था।मुझे और आन्जेलिका को छोड़कर इस दल के दूसरे पैलेस्टियन ही थे और जमाल के दोस्त भी थे।आन्जेलिका भी बहुत ही अच्छा खेल लेती थी।मुझे कुछ खास खेलना तो नही आता था.पर इन्होने मुझे अपने दल से बाहर नही निकाला।

एक दफे हमे जर्मन इन्टरयूनिवर्सिटी वाली बाल टूर्नामेन्ट का निमंजण मिला।इसका आयोजन मागदेबुर्ग यूनिवर्सिटी मे किया गया था।हमे पॉच दिनो के लिए वहॉ जाना था।हमारे खाने पीने का इन्तजाम वहॉ के मेन्जा मे किया गया था और सोने का इन्तजाम एक हॉस्टल के कॉमनरूम मे।अपना बिस्तर वगैरह हमे खुद ही ले जाना था।आने जाने का खर्चा हमे यूनिवर्सिटी से मिला हुआ था।

हम वहॉ ग्यारह बजे पहुँच गये थे।दोपहर के खाने के बाद एक कोर्ट लेकर शाम तक प्रेक्टिस करते रहे।मागदेबुर्ग यूनिवर्सिटी के पास एक इनडोर स्टेडियम थी.जहॉ वाली बाल.बास्केट बाल.टेबल टेनिश बैडमिन्टन या सारे खेलों की व्यवस्था थी।शाम के खाने के बाद हम यूँ ही

मागदेबुर्ग शहर देखने चल पड़े।
आन्जेलिका हमारे दल की कप्तान थी।मेरी बस उससे काम की ही बातें होती थी।नासिर का जिक्र हम कतई नही करते थे।
तलाक के बाद तो नासिर  बिल्कुल ही सन्यास ले रखा था।काम के बाद वो अपने को अपने कमरे मे ऐसे बन्द कर लेता था,जैसे उसे किसी से कुछ लेना देना ही न हो।मुझसे भी वो अपना सम्बन्ध प्रायः शून्य ही कर चुका था।
मागदेबुर्ग आने को तो मै आ गया था,पर ज्यों ज्यों शाम ढलती जा रही थी,मेरे हृदय का कम्पन उतना ही बढता जा रहा था।जिस तरह एक दिन मे उजाले और अन्धेरे दोनो का निवास होता है,उसी तरह आन्जेलिका मे भी एक सौम्यता और वहशीपन दोनो का निवास था।दिन के उजाले मे जो लड़की अपनी नजरे झुकाये यूनिवर्सिटी जाते दिखती थी,वही शाम को हाऊस ओ के कैटिन मे अपनी शर्म हया खोकर लोगों के बॉहों मे झूलती दिखती थी।पता नही कहॉ वो अपनी शर्म हया छोड़ आती थी।सभी को पता था कि वो नासिर की व्याहता रह चुकी है।शायद वो भी न भूली होगी कि कभी वो नासिर की व्याहता रही थी फिर भी!
मै अक्सर भूल जाता था कि मै जर्मनी मे रह रहा हूॅ।मुझे तो यहॉ आते ही अपना रह रह कर चौंकना पहले दिन से ही छोड़ देना था,जो मैने नही छोड़ा था।
कपड़े वगैरह बदल कर हम अपने अपने विस्तरों पर जा पड़े।जान बूझ कर मैने अपना विस्तर सबसे हट कर एक कोने मे लगाया था।सुबह छ बजे हमे उठना था।नौ बजे के आसपास जमाल उठा और कमरे की बत्ती बूझा दी।मैने करवट ली और अपना कम्बल सर तक खींच लिया।मुझे जिस बात का डर था,वही हुआ।दस मिनट भी न गुजरे थे कि आन्जेलिका बिल्कुल नंगी मेरे विस्तर मे आ घूसी।बड़ी मुश्किल से मै अपने आप को उसकी गिरफ्त से निकाल पाया।गुस्से मे मै न जाने क्या क्या बड़बड़ा गया।बाकी जो सात अरबी वहॉ थे,सबके सब लेटे खिलखिलाये जा रहे थे।आन्जेलिका को मैने साफ साफ कहा कि अगर वो अपनी हरकतों से बाज नही आती,तो मै रात की कोई ट्रेन लेकर बर्लिन वापस चला जाऊॅगा।तब जाकर मुझे उससे मुक्ति मिली।
पूरी रात मै एक मिनट के लिए भी न सो पाया।गई रात तक आन्जेलिका अपने खिलाड़ियों का हौसला बढाने मे लगी रही।एक छत के नीचे महज दो मीटर दूर से मै पहली बार अपने जीवन मे इस तरह की निर्लज्जता भुगत रहा था।मै मन ही मन दूसरे दिन सुबह की पहली ट्रेन लेकर बर्लिन वापस लौटने की सोच चुका था।
आन्जेलिका के लाख मना करने के बावजूद मै बर्लिन वापस चला आया।मै उससे ये भी साफ साफ कह आया था कि मै बर्लिन मे भी उससे कोई सम्पर्क नही रखना चाहता।
और वाकई मे मै जब तक इस हॉस्टल मे रहा भूल कर न उसकी ओर देखा और न पलटा।न मै उसके गुटेन मोर्गन पर कान धरता था और न ही उसके गुटेन टाग पर।कई दफे वो मेरा बॉह थाम कर मुझे रोकना भी चाही,जिसे मैने पूरी ताकत से झटक दिया।उसे देखते ही मेरा मन कड़वाहटों से भर जाता था।मुझे उससे एक घिन सी हो चली थी।
साल भर के बाद नासिर जगा।शाम को वो हाऊस ओ मे रहने वाले एक पाकिस्तानी के कमरे मे तीन पत्ता खेलने जाने लगा।मुझे ये पता नही था कि इस दरम्यान वो हशीस वगैरह का नशा भी करने लगा है।गई रात तक वो हाऊस ओ मे बैठा जुआ खेलता रहता था।एक दिन वहीं उसे पता चला कि हाऊस ओ मे एक वूपरताल की एक बड़ी खूबसूरत लड़की आई है।उसे एक इन्डियन लड़के ने फॉस रखा है।जब देखो तब कीचन मे उसके संग पूड़ी तलती रहती है,खीर बनाती रहती है।
नासिर के पास पैसा तो था ही,गाड़ी भी थी,एक स्टैन्डर्ड भी था और तो और और उसे लड़कियों को पटाने के सारे गूर भी आते थे।
पता नही उसने पेगी पर कौन सा जादू चलाया कि वो मलय को लात मारके उसके पास आ गई और मलय को तो देवदास ही बना दी।मलय पेगी को कैसा भविष्य देता,ये तो मै नही जानता,पर नासिर तो देखते ही देखते उसे एडिक्ट बना डाला।काम पर बीमारी का बहाना बना कर वो दिन रात पेगी को लिये अपने कमरे मे बन्द रहता था।जब भी ये फ्लोर पर दिखते थे डगमगाते ही दिखते थे।नशे से इनकी ऑखे लाल हुई रहती थीं।
अक्सर मै सोचता था कि आखिर क्या कर रहा है नासिर इस निर्बोध लड़की के साथ!उससे वो किस बात का बदला ले रहा है!
एक दिन वो मुझसे कहने लगाःमै अपने गम गलत कर रहा हूॅ दोस्त।गजब की गोश्त है पेगी।
मन ही मन मैने नासिर को भी अल्विदा कह दिया।
फ्लोर के आखिरी कमरे मे यानि तीन सौ बाईस मे एक जर्मन लड़का रहता थाःएकार्ट शाईबे।उसकी सहेली का नाम आन्या था।पूरे सिगमून्डसहोफ मे इतनी खूबसूरत और शौम्य लड़की कोई दूसरी न थी।एकार्ट उसे अपने स्कूल के दिनो से जानता था।सिगमून्डसहोफ मे शायद ही कोई होगा,जो एकार्ट की किस्मत पर रश्क न करता हो।आन्या हाऊस पी मे रहती थी और फिजिक्स पढती थी।
न जाने क्यों अचानक एकार्ट को एम्सटर्डम मे भगवान रजनीश के आश्रम मे जाने की सूझी।वो अपने एक सिमेस्टर की छुट्टी लेकर एम्सटर्डम चला गया।जब वो वापस आया,तब उसके कपड़े गेरूए हो चले थे।गेरूए रंग की जीन्स,गेरूए रंग की कमीज और ऊपर से भगवान रजनीश की माला।पता नही वो वहॉ क्या सीखने गया था!पर उसकी बातों से मुझे ऐसा लगता था कि इस आश्रम मे सेक्स मेडिटेशनो का एक मूल आधार और जरिया था।जिस ग्रूप मे उसे रखा गया था,उसमे सिर्फ पॉच लड़के और पच्चीस लड़कियॉ थी।ये अलग अलग देशों से वहॉ आई हुई थीं।इस एकार्ट से उन्होने छ महीने इतनी सेवायें करवाई कि अब वो आन्या से कन्नी काटने लग पड़ा।लड़कियों मे उसे कोई सुन्दरता ही न दिखती थी।अब वो इस सुन्दरता को लड़कों मे ढूॅढ रहा था।न जाने कहॉ उसे एक अलेक्स नामका जर्मन बावर्ची टकरा गया और वो दीन दुनिया भूलाकर उसके प्यार मे डूब गया।
आन्या एक संवेदनशील लड़की थी।चुपचाप अपना सामान बॉधी और बर्लिन को अल्विदा कहके वापस हमबुर्ग चली गई।
सिगमून्डसहोफ मे मै पॉच साल रहा।फिर मै शारलोटेनबुर्ग मे आ गया।आन्जेलिका,आला,नासिर और एकार्ट अभी भी वहीं रहते थे।
मै दुबारा वहॉ दो वर्षो के बाद गया।इन दो वर्षो मे सिगमून्डसहोफ का पूरा नक्शा ही बदल चुका था।वो एक मलवों का ढेर बन चुका था।दो वर्षो से यहॉ के हॉस्टलों की रंगाई पुताई नही हुई थी।हाऊस एन के इन्ट्रेन्स पर न जाने कितनी कबाड़ा सायकलें खड़ी थीं।मेरे कमरे मे एक पनामा का लड़का रहता था।जिस कमरे को मै हमेशा सजाये रखता था,उसने उसे कबाड़खााना बना रखा था।कमरे मे ही एक अरगनी बॉध कर वो अपने हॉथ के धोये कचड़े लटका रखा था।बाथरूम मे इतनी बदबू थी कि मुझे अपने नाक पर रूमाल रखना पड़ गया।कीचन का तो और भी

बुरा हाल था।वहॉ के वाश वेसिन, वहॉ की आलमारियॉ और मेजों पर गन्दे बर्त्तनों का अम्बार गॅजा पड़ा था।
हाऊस ओ की कैन्टिन बन्द पड़ी थी।वहॉ का डिस्को भी बन्द कर दिया गया था।वहॉ जो भी मुझे दिखा, दूर से ही चरसी लगा।दो वर्षो के बाद वहॉ मुझे कौन परिचित मिलना था!एकबारगी एक उदासी मेरे मन को घेर ली।इस शाम एक एक करके मुझे अपने सभी पड़ोसियों की याद आई।पता नही वो कहॉ हैं और क्या कर रहे हैं!
मेरा सम्पर्क सिर्फ आन्या के साथ था और आज तक है।अपनी पढाई खत्म करने के बाद म्यूनिख मे वो एक फर्म मे काम कर रही है, जो सोलर एनर्जी पर काम करते हैं।वो एक बार अपनी बेटी के संग बर्लिन मे मुझसे मिलने भी आई थी।उसकी बेटी जूलिया उसे अपने एक शादीसुदा कलिग ने भेंट मे दी थी।आन्या ने शादी न की थी और न करना चाहती थी।जूलिया उसकी सम्बल थी।वो अपने जीवन से खुश थी।
सन छियानबे मेरे जीवन मे संयोगों का वर्ष इस वजह से रहा कि इसी वर्ष मे मै एक एक करके अपने सभी पड़ासियों से मिला।
सबसे पहले मुझे आला और आन्जेलिका दिखे, फिर नासिर और एकार्ट मिले।
मै एक काम से शारलोटनबुर्ग गया हुआ था।मै एक डबलडेकर बस मे ऊपर बैठा हुआ था।अचानक मुझे आला दिखा।उसके कन्धे पर यही कोई एक पॉच छ वर्ष का लड़का बैठा उसके बाल नोचे जा रहा था।उसके बाल वैसे ही काले और घूँघराले थे, जैसे आला के।आला मेरी ही उम्र का था, पर उसके पीछे के बाल लगभग झड़ने को आये थे।जिस औरत का वो हॉथ थामे चल रहा था, मै उसे जानता था।उसका भी नाम आन्जेलिका था।आला की लाई रंडियों मे एक वही थी, जो अपने आगे पीछे तौलिया रख लेती थी या फिर सामने पड़ने पर गुटेन मोर्गन कह देती थी।
मै अगले बस स्टॉप पर उतर कर एक तीर की तरह विपरीत दिशा मे दौड़ा, पर मै आला को न ढूँढ पाया।न जाने कितने मकानो के सामने लगी नामों की तख्तियॉ मैने पढ मारी, पर मै आला से न मिल पाया।
निराश मुझे एक दूसरी बस लेनी पड़ी।
एक दिन ऐसे ही मै टेलीविजन के चैनल्स बदल बदल कर आये प्रोग्रामों को चेक कर रहा था कि अचानक एन टी वी चैनल पर मुझे आन्जेलिका दिखी।वो मौसम का हाल बता रही थी।मुझे वाकई चौंकना पड़ा।सहज विश्वास नही हो रहा था कि वो सिगमून्डसहोफ की आन्जेलिका है।उसमे कोई अन्तर नही आया था।वो भी मेरे ही उम्र की थी, पर उसे कोई भी चौबीस पच्चीस से ऊपर की नही कह सकता था।
मागदेबुर्ग मे उसकी कही एक बात मुझे आज तक याद हैःतुममे और दूसरों मे एक बहुत बड़ा अन्तर है।तुम्हे मुझमे वो चाहिये, जिसे तुम्हारे दोस्त ने मार डाला है।तुम मुझसे बेशक दूरी रखना, पर मुझसे नफरत न करना।मुझे ऐसा लगा था जैसे आन्जेलिका के कई नारीत्व पक्ष मुझसे अपने पूर्न जन्म की भीख मॉग रहे हों।
पता नही उसके निम्फोमैनी के पीछे नासिर का कितना हॉथ था!पर एक कम उम्र की लड़की को शादीसुदा होने के बावजूद अगर हर रात ये सुनने को मिले कि वो जाकर अपने को गैरों से तृप्त करवाये या फिर उसकी तुलना एक ताजे गोश्त से की जाये, तो उसके और निम्फोमैनिन के बीच कोई ज्यादे फासला नही रह जाता होगा।
अगर मै चाहता तो इस चैनल के जरिये आन्जेलिका का पता लगा सकता था, पर मै अपनी ली गई कसम नही तोड़ना चाहता था।इस चैनल पर हर रोज तकरीबन नौ महीने मै शाम के ठीक छ बजे आन्जेलिका से आने वाले दिन के मौसम का हाल सुना, फिर अचानक वो गायब हो गई।दुबारा वो न इस चैनल पर दिखी न किसी दूसरे पर।
मै वाकई आन्जेलिका से नफरत नही करता था।मै किसी से नफरत नही करता।इसका मुझे कोई अधिकार भी नही है।
नासिर से मेरी मुलाकात श्लोसस्ट्रासे पर हुई।ठीक वेर्टहाईम के सामने एक रेलिंग से लग कर अपने पेट से एक ट्रे टिकाये चॉदी के गहने बेचने खड़ा था।वही ढीले ढाले सलवार कमीज और पेशावरी चप्पल मे।अब वो दाढी रखने लगा था।मै उसे शायद ही पहचान पाता।मुझे उसी ने पहचाना।अपने यूथोपियन साथी के संरक्षण मे अपनी ट्रे छोड़कर को वो मुझे पास के ही एक कैफे मे ले गया।साथ हमने चाय पी।हालचाल के नाम पर बताने लगाःकिस्मत से अगर एकाध छल्ले बिक गए, तो गनीमत।शनिवार और रविवार को हेरमान एलर प्लात्स पर कमीशन के कपड़े बेचता हूँ।बड़ी गरीबी चल रही है दोस्त।कोई काम भी नही मिलता।इन डूचनियों ने मुझे बर्बाद कर के रख दिया।
ःपेगी का क्या हुआ नासिर!
ःउसका क्या होना था!दो साल मेरे संग सूटें लगाई।जब उसके पैसे न रहे, तो मुझे लात मार दी।
ःवो बर्लिन मे ही है!
ःनही नही।वो वूपरताल वापस लौट गई।
ःतुम बर्लिन मे कहॉ रह रहे हो!
ःक्रोयेत्सबेर्ग मे एक दोस्त के साथ।उसके साथ कपड़ो की एक दुकान भी खोली थी।वो चल नही पाई।बड़े पैसे जाया हुए।
ऑसुओं से उसकी दाढी सन चली थी, पर सच तो ये था कि मुझे उस पर दया नही, बल्कि गुस्सा आ रहा था।बर्लिन मे वो एक तरह से अपने पॉव टिका चुका था।अपनी पतन वो खुद ही बुलाया था।हर बात किस्मत पर तो नही थोपी जा सकती।
जीवन समय और सच्चाई से मुँह चुराने वालों के सामने जो खाई खींचती चली जाती है, उसके पाट एक छोटी अवधि के बाद ही नजरों से ओझल हो जाते है।फिर उसे पाटना इतना आसान नही होता जितना नासिर ने समझ रखा था।
पता नही उससे ये खाई पाटी जा सकेगी या नही!
एकार्ट मुझे एक मेट्रो मे मिला।वो अब मेरिन्गडाम मे रह रहा था।वहॉ उसके पास एक दो कमरों का निजी अपार्टमेन्ट था, जिसे उसके लिए उसके माता पिता ने खरीद रखा था।यूगेन्टआम्ट से उसे तीन ऐसे परिवार मिले हुए थे, जिनमे सिर्फ मॉए थी।उन्हे अल्कोहलों से फूर्सत ही नही थी।इन परिवारों के बच्चों की सारी जिम्मेवारी एकार्ट पर थी।उनके होमवर्क करवाना, उनके साथ खेलना, उनके साथ स्वीमिन्ग करने जाना, खरीददारियॉ करवाना, कहानियॉ सुनाना इत्यादि इत्यादि।इन कामों के एवज मे उसे पन्द्रह सौ मार्क मिलते थे।
संयोग से दूसरे दिन उसका जन्मदिन था।वो नाश्ते पर आने की जिद़ करने लगा।मुझे उसे हॉ कहना पड़ा।
शनिवार का दिन था।एकाध जेलियों की शीशियॉ रैप करवा कर मै चल पड़ा।नाश्ते की मेज बालकोनी मे लगाई गई थी।हमबुर्ग से भी दो लड़कियॉ आई हुई थीं।अलेक्स नाश्ते की मेज सजाने मे लगा था।
मुझे ये पता नही था कि इस बीच एकार्ट अलेक्स से डेनमार्क मे जाकर शादी भी कर आया था।हमबुर्ग से आई लड़कियॉ भी एक दूसरे से

शादीसुदा थीं।
जिसे मै असमान्य समझता था, उसे वो समान्य समझते थे। यहॉ किसी तरह के बहस की कोई गुंजायश ही न थी।
ये है मेरे जीवन का ग्यारहवर्षीय सफर। हम सभी को जो पाना था, हम पा चुके थे। हमे जो खोना था, वो हम खो चुके थे।
आन्या के अलावे बाद के दिनो मे मै इन सबसे अलग और विलग हो गया।
मै आज तक गलतियों को सिर्फ दो आयामों मे देखता हूँ, विचैतन्य और चैतन्य। विचैतन्य गलतियों को मै आज तक गलतियों की तरह नही लेता। फिर चैतन्य गलतियों को कम से कम मेरी क्षमा को अनुरोध नही करना चाहिये।
ये मेरी अतिवादिता है, पर मुझे इसी के संग जीना है।
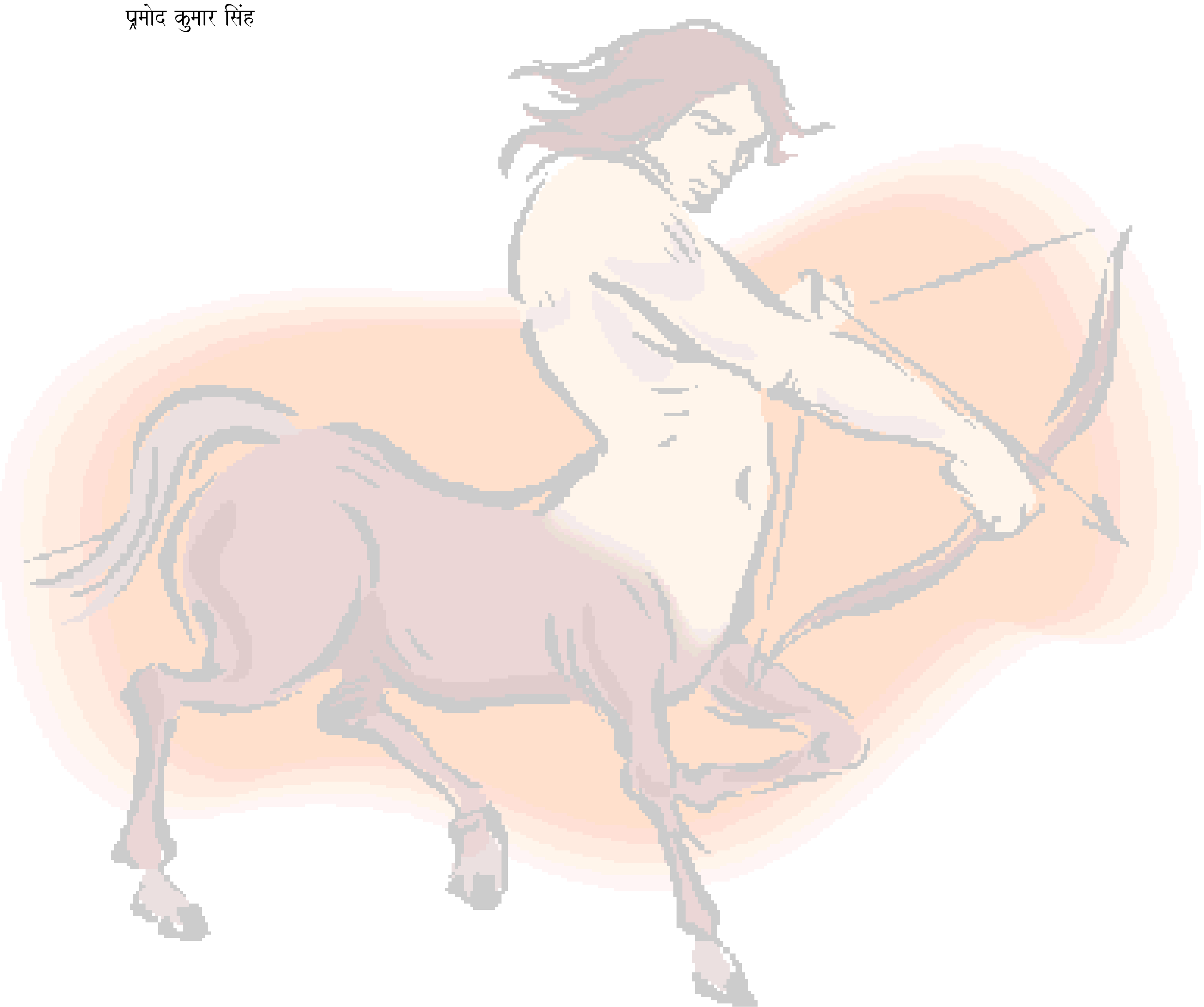
प्रमोद कुमार सिंह